INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA
ISSN 2454-8707 VOLUME-II,ISSUE-VII, March-2017

कमल कुमार की कहानियों में उभरता समकालीन नारी जीवन

डॉ.सूसन अलक्स
असिस्टेंट प्रोफसर,सरकारी कॉलेज,कोट्टयम.

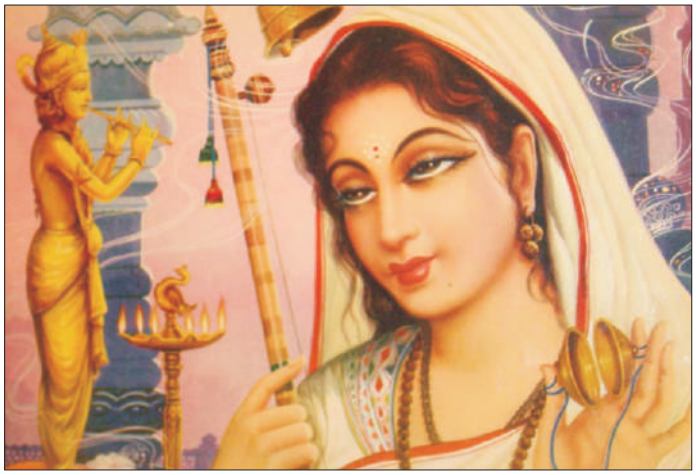

आमुख

साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कहानी मानव जीवन का सर्वांगीण चित्रण करने में सशक्त रही है। कहानी की मौखिक परंपरा प्राचीन काल से चलती आयी है। कहानी की लिखित परंपरा आधुनिक काल की देन है। हिंदी कहानी साहित्य को यथार्थ पर मुंशी प्रेमचंद जी ने प्रतिष्ठित किया। आगे कहानी साहित्य विविध आंदोलनों से गुजरकर समकालीन उत्तराधुनिकता के दौर में पहूँचकर भी अपनी लोकप्रियता को बरकरार रखने में समर्थ है।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ जनजीवन में आमूल परिवर्तन उपस्थित किया। शिक्षा के प्रचार प्रसार से भारतीय नारी जीवन पूर्ण रूप से बदल गया। घर के दीवारों से निकलकर नारी बाहर तो आई पर उसे इच्छित प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई। हिंदी साहित्य के रचनाकार विशेष्कर महिला कहानीकार नारी जीवन के इस द्वंद्वको उजागर करती हैं। **'हिंदी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन'** नामक अपने आलोचना ग्रंथ के आमुख में **श्रीमती साधना अग्रवाल** लिखती है **1."कथा लेखिकाओं के इस क्षेत्र में अवतरण के परिणाम स्वरूप नारी दृपुरुष संबंधों के नये मूल्यांकन, समाज जीवन में नारी के महत्व, आवश्यकता, अधिकार तथा परिवार, विवाह, दांपत्य जीवन और उनसे संबंधित कई समस्याओं को महिला कथा लेखिकाओं ने अपने विशिष्ट दृष्टिकोण द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया।" इस संदर्भ में डॉ. पुष्पपाल सिंह का मत उल्लेखनीय है, 2."समकालीन कहानी की नारी अपने व्यक्ति स्वातंत्र्य के प्रश्न को समस्त विश्व के नारी – समाज के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखती है... नारी यदि इस व्यक्ति स्वातंत्र्य को पा लेती है तो वह अपनी स्थिति को सार्थक अनुभव करती है किंतु अधिकांशतरू समकालीन कहानी में उसकी उस पीड़ा का बोध होता है, जो पुरुष अधिकृत समाज में उसे अपने 'स्व' को खोकर झेलनी पड़ती है, और जिस स्थिति में वह जीने के लिए अभिशप्त है।"**

आधुनिक और समकालीन दौर में कहानी लेखकों के समकक्ष अनेक लेखिकाएँ उभर आयीं जो मानव जीवन के विविध पहलुओं को अपनी रचनाओं में उकेरती हैं। नारी जीवन को अपने दृष्टिकोण से देखने परखने में ये लेखिकाएँ सक्षम दीखती हैं। **मृदुला गर्ग, प्रतिभा वर्मा, मालती जोशी, दीप्ति खंडेलवाल, मणिका मोहिनी, चित्रा मुद्गल** आदि लेखिकाओं के साथ **कमल कुमार** भी अपना विशेष स्थान रखती है। इस लेख में कमल कुमार जी की दो कहानियों पर विचार करने की कोशिश की गई है।

कमल कुमार जी का रचना संसार

श्रीमती कमल कुमार जी ने साहित्य की विविध विधाओं पर अपनी तूलिका चलाई है। उनकी कहानी संग्रह 'पहचान', 'फिर से शुरू', 'क्रमशरू', 'वैलेंटाइन डे', 'घर–बेघर', 'अंतर्यात्रा', 'यादगारी कहानियाँ', 'प्रेम संबंधों की कहानियाँ' और 'प्रतिनिधि कहानियाँ' हैं। उनकी कहानियाँ जीवन के विस्तृत धरातल को छूनेवाली हैं। गहन विचार उन में निहित है। उनकी कहानियाँ नारी जीवन का परिच्छेद हैं। परिवार के अंदर और बाहर उत्पीड़न सहता नारी जीवन के प्रति उनके मन में

सहानुभूति है। देह विमर्श से अलग उनका नारी विमर्श अस्मिता को तलाशता दीखता है। **कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ** के आमुख में वे लिखती है, 3.. **"कहानी जीवन की विविधताओं, व्यक्तिगत, सामाजिक अथवा सार्वजनिक यथार्थ के अनजाने– अनदेखे क्षेत्रों में ले जाती है। जहाँ नये प्रश्नों में जूझते हुए हम नई दिशाओं की तलाश करते हैं।"**

उत्तराधुनिक परिस्थितियाँ भारतीय मानव जीवन में द्वंद्वात्मक स्थितियाँ उपस्थित करती है। भूमंडलीकरण की नई आर्थिक नीति में पूरा विश्व एक बाजार के रूप में परिवर्तित होता जा रहा है। हर कोई ग्राहक और हर वस्तु बिकाऊ बन जाने की विकल परिस्थिति उभर आई है। नारी को भोग की चीज के रूप में देखने की मध्ययुगीन प्रवृत्ति फिर पनपने लगती है। नारी का गाँधीवादी आदर्श रूप विनष्ट हुआ। समाज और परिवार में अपने वर्चस्व की स्थापना के लिए लालायित नारी अपने सामने विरोधी शक्तियों के अतिक्रमण से खुद को बचाये रखने का अथक प्रयास करती है। नारी के इस प्रयास में पूर्ण रूप से समर्थन करती हुई कमल कुमार जी अपनी कहानियाँ गढ़ती हैं। वे लिखती हैं 4.**"आज की त्रासद विसंगतियों, विडंबनाओं, असंगतियों से बाधित भी होते हैं, पर उनका अतिक्रमण भी करते है। इस समय स्त्री अपने खिलाफ हो रहे अन्याय, असमानता और दी गई रूढ़ियों का विरोध कर कही हैं, जो कहानियों में दर्ज हो रहा है"।**

नारी जीवन अब अपने परिवार और परिवारवालों के इर्द दृगिर्द नहीं घूमता है। उसे जीवन में अपनी इच्छाएँ और लालसाएँ हैं। विवाह, प्रेम, नौकरी जैसे मामलों में उसे अपना निजी मत है। उसके खिलाफ परिवार और बाहर से होनेवाले अत्याचारों और अन्यायों के विरुद्ध आवाज उठाने की क्षमता उस में है। इस संबंध में कमल कुमार जी का मत है, 5 **".हम स्त्रियाँ सामाजिक और व्यक्तिगत रूढ़ियों से चकराती हैं और रिश्तों को नया विमर्श देकर नैतिकता की कहानियाँ लिख रही हैं। स्त्री की अपनी कामनाओं, इच्छाओं, लालसाओं की वर्जना और उन्हें अपराध माने जाने के खिलाफ संघर्ष में प्रतिबद्ध हैं।"**

कमलिनी कहानी कमल कुमार जी की नारी संबंधी मनरू स्थिति का अनावरण है। नारी पढ़ी लिखी होकर भी समाज केवल उसे शरीर मानता है, उसके पद या शिक्षा की परवाह नहीं करता है।

शाम के समय वह बस अड्डे में खड़ी है। सड़क में आने जाने वाले कम हो गये हैं। जब वह यहाँ आई थी तो काफी लोग खड़े थे, जो एक–एक, दो–दो करके आने जानेवाली बसों में लोप हो गये। वह अगली बस का समय पूछना चाहती ,पर नहीं पूछा था। 6.**"यों शाम के अंधेरे में अकेली खड़ी औरत को आसपास के लोग संदेह की दृष्टि से देखते हैं।"** वह चाची से मिलने आई थी। चाची ने उसे रुकने के लिए कहा तो था पर वह ड्यूटी पर जाने की बात कहकर निकल आयी थी। इस छोटे से कस्बे में उसके पढ़े लिखे होने का रोब था। वह शिक्षा मंत्रालय में स्कूल निरीक्षक के पद पर थी। इस जिले के सारे स्कूल उसके अंडर ही आते थे। लेकिन अब इस अंधेरे में बस स्टेंड में खड़ी खड़ी उसे अपने इस ऊँचे पद से कोई लाभ नहीं मिल रहा था। वह भी केवल एक साधारण स्त्री की तरह सब की नजरो का केंद्र बनती जा रही थी।

उसके मन में अनेक विचार उभर आने लगे। बचपन और जवानी के दिन । बापू का लाड़ प्यार खूब मिला। उन्होंने उसे पढ़ाया– लिखाया। वह बड़ी होकर भाइयों को पढ़ाया, लिखाया, उनकी सारी जरूरतें पूरी की। वह चौंककर अपने विचारें से जगी। । उसकी आँखों में कई सवाल थे। बढ़ते अंधेरे में वहाँ खड़ी होकर उसकी रूह कांप रही थी। उसके साथ सामूहिक बलात्कार भी हो सकते हैं। फिर उसकी लाश को पहाड़ी के नीचे फेंक सकते हैं। एक आदमी बार बार उसके पास आता और दूर जाता। वह वही फलवाला था , जो पहले स्टैंड के कोने में चादर बिछाकर फल रखकर बैठा था। उस फलवाले ने उसे वहाँ बैठने का इंतजाम किया। वह ऐसा क्यों कर रहा है। कोई षड्यंत्र भी रच सकता है। 7.**"उसे सारी स्थिति पर गुस्सा आ रहा था। पढ़ी– लिखी, शिक्षा मंत्रालय में स्कूल निरीक्षक, पूरे जिले के स्कूल उसके निरीक्षण में और वह निश्चिंत होकर इस स्वतंत्र देस में इस कस्बे के बस– स्टैंड पर क्यों नहीं खड़ी हो सकती?''** वह अपने में अंतर्धान हो गई थी।

उठो , उठो की आवाज सुनकर वह देखती है तो वह बस रोके खड़ा था। आखिरी बस यही तो है। वह लटपट सी उठकर भागी थी। उसने उसे चढ़ जाने दिया था। फिर लपककर फुटबोर्ड पर चढ़ गया था। वह बेलगांव में सरकारी क्वाटर तक उसे ले आया। वह उस गणेशी भैया को सरकारी क्वाटर में रात बिताने की अनुमति देती है।

कमल कुमार जी यह दिखाना चाहती है कि समकालीन जटिल परिस्थिति में भी कुछ मानवीय मूल्य शेष है जो इस दुनिया को आगे ले चलता है।

जंगल कहानी नारी मुक्ति का खुला दस्तावेज है। सुमन यूनिवर्सिटी में प्रोफसर है। वह खुद अपनी गाड़ी तेज चलाती है। उन्मुक्त जीवन शैली को अपनाकर समाज के बंधनों से अपने को मुक्त पाती है। वह क्लास में चूड़ियाँ खनखनाकर जाती है, प्रिन्सिपल नन के मना करने के बाद भी। वह पहली थी जो कॉलेज में सलवार कमीज पहनकर आई थी।

पिता कर्नल चोपड़ा के प्रश्नों से बचने के लिए वह होस्टल में शिफ्ट कर लेती है। दोस्त अलका के समझाने पर भी वह वापस नहीं जाती। बिन माँ के सुमन को पिता ने माँ और पिता दोनों बनकर पाला था। लेकिन सुमन उसकी बातों पर चलना पसंद नहीं करती थी। रात को वह अक्सर देर से लौटती। वह शराब भी पीने लगी थी।

सुमन पी.एच.डी में रजिस्ट्रेशन कर लेती है। डॉ. अजीत राय चौधरी उनके निदेशक थे। पिता उसे शादी केलिए मजबूर करता है , लेकिन सुमन नहीं मानती। अलका कई कई दिनों तक सुमन से नहीं मिलती थी। सोचा रिसर्च में व्यस्त होगी। एक दिन कॉलेज में धमाका हुआ। कॉलेज की दीवारें हिल गईं। पता चला सुमन प्रेगनेंट है। कोई पूछता तो कहती हाँ, हूँ।

कॉलेज में यह खबर आग की तरह फैल गई। प्रिंसिपल ने सुमन को बुलाया था। वह अपने फैसले पर अटल रहती है। पर एक सप्ताह बाद उसे टर्मिनेशन लैटर मिला। वह पूछ बैठती है, 8.. **"यह कैसा न्याय है। मेरी निजी जिंदगी में किसी को दखल देने का कोई अधिकार नहीं है।"** यह खबर सुनकर पिता को दिल का दौरा पड़ा। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति ट्रस्ट के नाम कर दिया। दो दिन बाद उनकी मृत्यु की खबर सुमन को मिला।

सुमन ने एक बच्ची को जन्म दिया। उसे होस्टल छोड़ना पड़ा था। इस शहर में उसे नौकरी कहीं नहीं मिली थी। उसे हिमाचल प्रदेश के किसी कृलेज में नौकरी मिलती है। धीरे धीरे अलका से उसका संपर्क कम हो गया। बारह साल बाद अलका को सुमन का फोण आया। वह अपनी बेटी शिल्पी की पढ़ाई के सिलसिले में यहाँ के कॉलेज में नौकरी प्राप्त करके आ रही है। सुमन बदल गई थी। आर्थिक, सामाजिक और अकेलेपन के विरुद्ध लड़ाई की मैदान जैसा था उसका जीवन । बेटी को पब्लिक स्कूल में दाखिला कर दिया था। किराए का एक मकान ले लिया था। पिता के बारे में पूछने पर माँ– बेटी दोने के बीच अनमनापन पनप उठता। शिल्पी ने जब बारहवीं पास की तब सुमन से अपने पिता का नाम जान लिया। शिल्पी अपने पिता से मिलने जाती है, पर डॉ. अजीत राय चौधरी उसे पहचाने से इन्कार करते हे। निराश होकर शिल्पी वापस आती है। वब अपनी माँ से पूछती हा कि आप को मेरी जिंदगी नष्ट करने का अधिकार किसने दिया। लेकिन वह अपनी माँ को गले लगाकर कहती है कि आप सच्ची और बहादुर औरत हैं। क्यों कि आप ने सच बताने की हिम्मत तो दिखाई ।

पिता की कायरता और बेपरवाही के सामने शिल्पी अपनी माँ को सही मानने के लिए तैयार होती है। सुमन माँ बनने के 'थ्रिल' का अनुभव करने के लिए शादी किये बिना गर्भवती होती है। समाज से टकराकर वह बेटी को पालती है। समाज द्वारा पूछे गये सवालों का सामना करके बेटी माँ से विरोध करने लगती है पर अंत में वह माँ की सच्चाई जान जाती है। प्रस्तुत कहानी समाज और स्त्री के टकराहट की खुली तस्वीर है।

निष्कर्ष

कमल कुमार जी की कहानियाँ समकालीन नारी जीवन को उभारने में सक्षम दीखती है। समाज में नारी को अपनी अस्मिता की रक्षा करना किस हद तक मुश्किल है , यह उनकी कहानियों में स्पष्ट दृष्टव्य है। नारी मन की विह्वलताएँ इनकी कहानियाँ बखूबी अभिव्यक्त करती है। परिवार के अंदर होनेवाली शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न, दोहरी आचार संहिताएँ, परिवार के ही सदस्यों के स्वार्थ के आगे नारी अगर विद्रोह करती है तो आश्चर्य की कोई गुंजाइश नहीं, यह भी दिखाना कमल जी अपना लक्ष्य मानती है।

संदर्भ सूची

1.साधना अग्रवाल, हिंदी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन ,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृ. सं. 2
2.डॉ. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई गिल्ली, 1986, पृ.सं.150
3.कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं 6
4.कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं 6
5.कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं.6
6. कमल कुमार रू कमलिनी,कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं. 50
7.कमल कुमार रू कमलिनी,कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं. 53
8.कमल कुमार रू जंगल ,कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं. 80